अभिनय की बदौलत मुकाम बनाया सौरभ ने

गोरखपुर में जन्मे सौरभ के पिता दिल्ली विश्वविद्यालय में संगीत और ललित कला विभाग के डीन थे, जिसके कारण उनकी शिक्षा दीक्षा दिल्ली में हुई। कला की सीख विरासत में उन्हें मिली और उन्होंने इसे अपना कैरियर बनाया। फिल्म लेखक, निर्देशक और अभिनेता सौरभ ने फिल्म 'रात गई बात गई' के जरिए निर्देशन की कमान भी संभाली और इसका लेखन भी उन्होंने रजत कपूर के साथ मिलकर किया।

बढ़िया अभिनेता होने के लिए सुंदर काया और सुंदर चेहरा जरूरी नहीं है, यह बात कई लोगों ने साबित कर दी है। नसीरूद्दीन शाह हों, ओम पुरी हों, परेश रावल हों या फिर सदाशिव अमरापुरकर। यह सभी अपने चेहरे मोहरों से भले अन्य अभिनेताओं के सामने फीके पड़ते हों लेकिन अभिनय में इनका कोई सानी नहीं। इसी कड़ी में सौरभ शुक्ला का नाम भी लिया जा सकता है जोकि अपनी बेहतरीन अदाकारी के लिए ही नहीं बल्कि अपने बढ़िया लेखन के लिए भी जाने जाते हैं। फिल्म 'सत्या' के कल्लू मामा के नाम से पहचाने जाने वाले शुक्ला ने ज्यादा बड़ी संख्या में फिल्में भले न की हों लेकिन उन्होंने अब तक जो भी किरदार निभाये हैं वह दर्शकों के दिलों में तरोताजा हैं।

शुक्ला उत्तर प्रदेश के गोरखपुर शहर के रहने वाले हैं। उनके परिवार ने यह शहर तब छोड़ दिया था जब शुक्ला दो साल के थे। इनका परिवार दिल्ली चला आया जहां के खालसा कालेज में शुक्ला ने अपनी पढ़ाई पूरी की और १९८४ में थियेटर से जुड़ गये। धीरे-धीरे वह थियेटर जगत के प्रसिद्ध कलाकार के तौर पर उभरे। इस दौरान उन्होंने कई बेहतरीन नाटकों में काम किया जिनमें लाइक ए व्यू फ्राम द ब्रिज, लुक बैक इन एंगर, घासीराम कोतवाल प्रमुख हैं। सौरभ ने १९८८ में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिले के लिए इम्तिहान दिया, लेकिन उनका चयन नहीं हो पाया, लेकिन तीन साल बाद एनएसडी रंगमंडल के लिए वह पेशेवर कलाकार के तौर पर चुन लिए गये। तब वह 'साक्षी' नाट्य संस्था के सक्रिय सदस्य रहे। शुक्ला जब दिल्ली में एनएसडी से जुड़े उस दौरान निर्देशक शेखर कपूर की नजर उन पर गई और उन्होंने उन्हें अपनी फिल्म 'बैंडिट क्वीन' में काम दिया। इसके बाद विजय आनन्द ने दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले अपने धारावाहिक 'तहकीकात' में उन्हें गोपी का प्रसिद्ध रोल दिया।

बॉलीवुड में शुक्ला के लिए बड़ा ब्रेक राम गोपाल वर्मा की फिल्म 'सत्या' साबित हुई। इस फिल्म के सह लेखक भी शुक्ला थे। मनोज वाजपेयी केन्द्रित इस फिल्म में शुक्ला का कल्लू मामा का जो किरदार था वह दर्शकों को खूब भाया और शुक्ला को इसी नाम से पहचाना जाने लगा।

शुक्ला के साथ एक बात और है कि अभी तक भारतीय विषय को लेकर बना गई विदेशी फिल्मों के लिए वह भाग्यशाली साबित हुए हैं और ऐसी जिस फिल्म में भी उन्होंने काम किया उसकी झोली आस्कर अवार्ड से भर गई। बहुत कम लोगों को मालूम है कि आठ आस्कर जीतने वाली फिल्म गांधी में उनकी एक दृश्य की भूमिका थी, जो उन्होंने १२वीं कक्षा में पढ़ाई करने के दौरान १९८१ में की थी। प्रसिद्ध अभिनेता रिचर्ड एडनबरो अभिनीत 'गांधी' फिल्म में उनका चयन भीड़ के एक दृश्य के लिए ७५ रुपए प्रतिदिन के हिसाब से हुआ था। इस दृश्य के लिए उनकी २४ दिनों की शूटिंग हुई। मगर फिल्म रिलीज के बाद वह महज एक दृश्य में दिखाई दिए।

गोरखपुर में जन्मे सौरभ के पिता दिल्ली विश्वविद्यालय में संगीत और ललित कला विभाग के डीन थे, जिसके कारण उनकी शिक्षा दीक्षा दिल्ली में हुई। कला की सीख विरासत में उन्हें मिली और उन्होंने इसे अपना कैरियर बनाया। फिल्म लेखक, निर्देशक और अभिनेता सौरभ ने फिल्म 'रात गई बात गई' के जरिए निर्देशन की कमान भी संभाली और इसका लेखन भी उन्होंने रजत कपूर के साथ मिलकर किया। इससे पहले उन्होंने बिपाशा बसु, डीनो मोरिया और इरफान खान को लेकर 'चेहरा' फिल्म का निर्देशन किया था। फिल्म के लेखन, अभिनय और निर्देशन की जिम्मेदारी को एक साथ निभाने में सौरभ को कोई दिक्कत नहीं होती। उनका कहना है कि वह तीनों ही काम का एक समान आनंद लेते हैं। वह कहते हैं कि अभिनय का काम लेखन की समझदारी के बगैर अधूरा है। फिलहाल सौरभ दो फिल्मों के निर्देशन में व्यस्त हैं। इनमें 'आईएम २४' और नेहा धूपिया और विनय पाठक अभिनीत फिल्म 'पप्पू कांट डांस साला' शामिल है। इन फिल्मों की रिलीज दीवाली के बाद होगी। इसके अलावा 'ऊटपटांग' फिल्म में उन्होंने लेखन के साथ-साथ अभिनय किया है। सुधीर मिश्रा की फिल्म 'दिल दरबदर' में उन्होंने पावर ब्रोकर की भूमिका अदा की है।

मौत के ६२ वर्ष बाद छिनी हिटलर की नागरिकता

पूरी दुनिया को अपनी नाजी हुकूमत से थर्राने वाले जर्मन तानाशाह एडोल्फ हिटलर की मौत के तकरीबन ६२ वर्ष बाद आखिरकार जर्मनी में ही उसकी नागरिकता छीन ली गई। बाल्टिक सागर स्थित जर्मनी के बैड डोबरां शहर की नगर परिषद ने इस सप्ताह चार अप्रैल को सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर मूलरूप से आस्ट्रियाई नागरिक हिटलर का नाम अपने मानद नागरिकों की सूची में से हमेशा के लिए हटा दिया। बैड डोबरां जर्मनी के उन चार हजार शहरों में आखिरी ऐसा शहर था जिसने नाजी शासन के दौरान हिटलर को सम्मान स्वरूप मानद नागरिकता दे रखी थी। हिटलर की नागरिकता को लेकर विवाद तब गर्माया जब जी-आठ के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने जा रहे बैड डोबरां शहर में सम्मेलन के विराधियों ने इस मामले को सार्वजनिक कर दिया और मीडिया में इसे काफी तूल दे रिया। ऐसी अफवाहें उड़ाई गई कि अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यु बुश और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर के लिए उस शहर में पहुंचना जहां हिटलर एक सम्मानीय नागरिक हो, निस्संदेह एक असहज स्थिति होगी लिहाजा नगर परिषद को हिटलर की नागरिकता खत्म करने का कदम उठाना पड़ा। जी-आठ समूह में शामिल अमेरिका, ब्रिटेन और रूस वे तीन प्रमुख देश हैं जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में नाजी सेनाओं को करारी शिकस्त दी थी और जिनके जेहन में नाजी सेनाओं की क्रू र और बर्बर कार्रवाइयां आज भी ताजा हैं।

वर्ष १९४५ में जर्मनी की पराजय और हिटलर की मौत के साथ ही जर्मनी के तकरीबन सभी शहरों ने हिटलर की नागरिकता खत्म कर दी लेकिन उसका नाम बैड डोबरां में अभी तक एक सम्मानित नागरिक के तौर पर दर्ज था। यह मामला कुछ इतना गर्माया कि बैड डोबरां की नगर परिषद को शहर के संग्रहालयों, कार्यालयों, कला दीर्घाओं, टाउन हाल समेत सभी स्थानों से हिटलर से जुड़ी हर निशानी को हटाने के लिए विवश होना पड़ा। जिन दिनों जर्मनी में नाजी हुकूमत थी बैड डोबरां में १९३२ में हुए नगर परिषद चुनाव में नाजी पार्टी भारी मतों से विजयी हुई थी ऐसे में सम्मान स्वरूप हिटलर को यहां की मानद नागरिकता प्रदान की गई थी। शहर के मेयर हार्टमुट पोल्जिन ने समूचे प्रकरण पर अफसोस जाहिर करते हुए कहा- इस छोटे से शहर में क्या रखा है इसकी खासियत ही यही थी कि इससे हिटलर की कई महत्वपूर्ण यादें जुड़ी थीं। उन्होंने कहा कि एक ऐसे व्यक्ति की नागरिकता खत्म करने को तूल दिया गया जो अब इस दुनिया में नहीं है। वैसे भी हिटलर की मानद नागरिकता से संबंधित कोई कानूनी दस्तावेज मौजूद नहीं है फिर इतनी हाय तौब क्यों की गई। उन्होंने कहा कि आज तक सरकार की ओर से यही कहा जाता रहा है कि हिटलर से जुड़े इतिहास को संजो कर रखा जाए पर अब अचानक सब कुछ खत्म करने की बात होने लगी।

आस्ट्रिया में १९१३ में म्यूनिख आने के बाद हिटलर ने १९२५ में यह कहते हुए जर्मन सरकार से वहां की नागरिकता की अपील की कि उसे जर्मनी में रहे हुए अरसा हो गया है और उसने प्रथम विश्व युद्ध में जर्मन सेना की ओर से हिस्सा भी लिया है। सेना में उसके योगदान को देखते हुए जर्मनी के ब्रांशवेग शहर ने १९३२ में सबसे पहले हिटलर को जर्मनी की नागरिकता प्रदान की पर आज इस शहर के मानद नागरिकों की सूची से भी हिटलर का नाम हटाया जा चुका है। हिटलर का जन्म आस्ट्रिया के एक गरीब किसान परिवार में २० अप्रैल १८८९ को हुआ था। गांव के स्कूल में अपनी शुरुआती शिक्षा पूरी करने के बाद वह १९०७ में फाइन आर्ट्स की उच्च शिक्षा के लिए विएना पहुंचा। उसके जीवन के ये दिन काफी तंगी के संघर्ष भरे रहे। पोस्ट कार्डो पर चित्र बनाकर उन्हें बेचने का काम कर उसने जैसे-तैसे यहां अपने दिन गुजारे। आखिरकार १९१३ में वह जीवन में कुछ नया करने की उम्मीदों के साथ म्यूनिख पहुचा इसके बाद प्रथम विश्व युद्ध में हिटलर को जर्मनी की बावेरियन रेजिमेंट में बतौर सैनिक शामिल होने का मौका मिला। इसके बाद से हिटलर के जीवन ने नया मोड़ लेना शुरू कर दिया।

प्रथम विश्व युद्ध खत्म होने के साथ ही १९१९ में हिटलर जर्मनी की नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी अर्थात नाजी पार्टी के संपर्क में आया और सेना की नौकरी छोड़ पार्टी के राष्ट्रवाद के संदेश के प्रचार में शामिल हो गया। उसने १९२६ में नाजी पार्टी का पुनर्गठन किया और खुद को पार्टी का सर्वेसर्वा घोषित कर दिया। दो अगस्त १९३४ को उसने आधिकारिक तौर पर यूरर की उपाधि ग्रहण की और प्रथम विश्व युद्ध की हार का बदला लेने के लिए १९३९ में पोलैंड पर आक्रमण कर मित्र राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध का एलान कर दिया। दो तीन वर्ष जर्मन सेनाओं ने भारी सफलता हासिल की लेकिन ६ जून १९४४ को मित्र राष्ट्रों के फ्रांस को मुक्त कराने के लिए जर्मन सेना पर धावा बोलने और रूसी सेनाओं के बर्लिन की ओर बढ़ आने के साथ ही जर्मनी की हार होने लगी और ३० अप्रैल १९४५ को आखिरकार बर्लिन के एक सैनिक बंकर में हिटलर ने आत्महत्या कर ली। इन घटनाओं को बीते कई दशक हो चुके हैं। विश्व व्यवस्था बदल चुकी है। राजशाही और तानाशाहों का दौर खत्म हो चुका है। हिटलर और उससे जुड़ी यादों को मिटाने की हर संभव कोशिश की जाती रही लेकिन सच तो यह है कि तमाम कोशिशों के बावजूद इतिहास कभी मिटाया नहीं जा सकता।